BC-22-13

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

हिंदी साहित्य और समाज

संपादक
प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार
प्रा. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

परिकल्पना

© संपादकद्वय

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 595

ISBN : 978-93-95104-12-8

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, के. 37, अजीत विहार, दिल्ली-110092
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ला, दिल्ली से टाइप सेट होकर
कामेक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

माधवराव सप्रे के निबंध में समाज 82
—प्रा. माधवराव गजाननराव जोशी
महिला लेखिकाओं के साहित्य में मुक्ति के स्वर 88
—डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड
आँचलिकता की सोंधी महक : फणीश्वरनाथ रेणू 96
—डॉ. नानासाहब शं.गायकवाड 'संगित'
निराला के काव्य में राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति 102
—प्रा. डॉ.पी.एम. भूमरे
संत रैदास के काव्य की प्रासंगिकता 109
—प्रा. डॉ. एम.डी. इंगोले
स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान 113
—डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
रमणिका गुप्ता के काव्य में अभिव्यक्त दलित संवेदना 117
—प्रा. डॉ. राहुल पुंडलिकराव वाघमारे
21वीं सदी की हिंदी कविताओं में आदिवासी विमर्श 123
—प्रा. डॉ. भगवान कदम
वैश्विक धरातल पर दलित साहित्य 127
—डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की
वर्तमान मीडिया के परिप्रेक्ष्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी
'जंगल की रानी' का अनुशीलन 132
—डॉ. पाटिल माधव सुभाषराव
हिंदी साहित्य में महिला कथाकारों का योगदान 137
—प्रो. डॉ. संजय गड़पायले
मराठी से हिंदी में अनुवादित आत्मकथा में घुमंतू जनजातियों का चित्रण 142
—डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में वस्तुसंबंधी मूल्य 146
—प्रा. डॉ सविता चोखोबा किर्ते
यशपाल कृत उपन्यास दादा कामरेड : नारी विमर्श 150
—डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा
हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी स्त्री जीवन 154
—प्रा. डॉ. राम दगडू खलंगे

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

वैश्विक धरातल पर दलित साहित्य

डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की
हिंदी विभागध्यक्ष
नूतन महाविद्यालय सेलू

वर्तमान युग में साहित्य में दलित शब्द का विशेष अर्थ प्राप्त हो रहा है। ''दलितों द्वारा, दलितों के लिए ही लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है।'' क्योंकि यह स्वानुभूत साहित्य ही दलित साहित्य है और यही सही है क्योंकि जब तक मनुष्य किसी बात की स्वयं अनुभूति नहीं करता तब तक वह बात उतनी प्रभावी नहीं हो सकती। 'दलित साहित्य' शब्द से पता चलता है कि 'दलित' शब्द के साथ जुड़ा है। अतः दलित समाज इनका वर्ण्य-विषय हे केवल समाज दर्शन नहीं बल्कि विश्वशांति, विश्वैक्य, मानवतावाद, शोषणविहीन समाज, समानता, बंधुता को लेकर चलता है।

आज इक्कीसवीं सदी का पहला दशक चल रहा है। नई सामाजिक परिस्थितियाँ, नई सांस्कृतिक प्रवृत्तियों ने जन्म लिया है। देश में सत्ता का परिवर्तन, आधुनिकीकरण, उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, वैश्विकवाद में आज विश्व एक बाजार बनने की दिशा में उभर रहा है, तब भी सामंती पूँजीवादी शासक वर्ग का प्रभुत्व रहा है। भारतीय साहित्य में प्रतिबिबित दलित एवं स्त्री जीवन का चित्र इन सामंती संस्कारो के प्रति विद्रोह तथा समाज के जनतांत्रीकरण की पुकार है।

बीजशब्द : दलित साहित्य, मानवतावाद, समानता, बन्धुता, शोषणविहित समाज, आधुनिकीकरण।

प्रस्तावना : हम वैश्विक धरातल पर दलित साहित्य की बात करे तो सबसे पहले हम अमेरिका और अफ्रीकी देशों में दलित साहित्य को जाने। उत्तर अमरीका के दक्षिण भाग में 'गुलाम राज्यों का प्रारंभ हुआ। वर्जिनिया में पहली बसती ... लाख थे। जिसे मनुष्य ही नहीं बल्कि कुर्सी या टेबल की तरह मिलकत

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

(प्रॉपर्टी) समझते थे। उसे बेचा या खरीदा जाता था। चुनाव में हिस्सा नहीं ले सकते थे। स्कोट नामक नीग्रो (अश्वेत) को न्यायाधीश ने कह दिया था, "तुम नीग्रो हो मनुष्य नहीं।" मनुष्य साक्षर हो या निरक्षर लेकिन उसका मन किसी न किसी तरह अपनी अभिव्यक्ति तो करता ही है चाहे वह बोलना या गाना हो और मौलिक अभिव्यक्ति भी हो सकती है। अमेरिकन अश्वेत साहित्य में सॉन्ग और नेरेटिव गीतों और आत्मकथन के दो स्वरूप दिखाई देते है। ब्लॅक लिटरेचर में कथा साहित्य कम है क्योंकि वे मूल स्थान वतन छोड़कर आये है। उस साहित्य में कोई रस नहीं है क्योंकि दया, कृपा पर गुलाम निर्भर रहे है। उनके पास किसी भी प्रकार का साहित्य नहीं क्योंकि वे संस्कृति शून्य है। अश्वेतों को आत्मा नहीं है। अफ्रीकन पिछड़े हुए, शारिरिक और मानसिकता का अभाव, बिकाऊ चीज है उसमें आध्यात्मिकता कैसी?

अमेरिकन समाज, साहित्यकार एवम् विश्वविद्यालय 'ब्लेक लिटरेचर' की उपेक्षा नहीं करते। ब्रिटन हेलन ब्लेक लिटरेचर के पिता है चार्ल्स फेड हार्टमा ने न्यूयार्क में 1915 में 3 कविताओं का प्रकाशन किया जिसमें उन्होंने आप बीती वेदना की कविताएँ लिखी। अमेरिका का ब्लेक लिटरेचर न सिर्फ गीतो में बल्कि कविताओं धार्मिक गीत, प्रवचन, लोककथा, लोक साहित्य आदि स्वरुपों में है। 'मृत्यु ही मुक्ति है' मृत्यु ही गुलामी का अंत ला सकती है आत्मकथानक साहित्य में ल्यूसी टेरी, ओलोडाट एकिआनो, फिलिस व्हिटली, डेविड बोकर हेरिपट आदि ने लिखे। अश्वेतो में नवजागृति आने लगी तो बूकर टी. शलोर्ट ग्रम्फे, आनाकपूर, पोल डवान्ट, ऐलिस नेलसन ने हलचल मचा दी। बूकर टी, बोशिग्टन की आत्मकथा Up from slavery फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन, रशियन और यूरोप की छः भाषाओं में अनुवाद हुआ। गुजराती भाषा में भी प्रा. ठाकोर ने आत्मकथा का अनुवाद किया। यदि हम दूसरे देशों के ब्लैक लिटरेचर में दिलचस्पी रखते है तो अपने यहाँ (भारत) के ब्लैक लिटरेचर जैसा दलित साहित्य के बारे में सोचा है? क्या हमने कभी सोचा है कि पीड़ितों का भी एक विश्व है ?

जबसे हम हिंदी साहित्य में 'दलित साहित्य' की बात करने लगे है तबसे अफ्रीकी साहित्य की ओर पूरे विश्व का ध्यान आकृष्ट हुआ है। इससे पता चलता है कि अफ्रीकी साहित्य और भारतीय दलित साहित्य में कुछ समानता है। अफ्रीकी साहित्य में भी प्रतिरोध की भावना है। चिनुआ अबेचे कृत पहला उपन्यास 'थिंग्स फोल अपार्ट' प्रकाशित हुआ जिसमें रंग भेद की नीतियों पर कड़ा विरोध किया गया। जिस तरह दलितों की भारत में उपेक्षा की गयी उसी तरह अफ्रीका में भी रंगभेद के कारण वहाँ के मूल निवासियों की उपेक्षा की गयी। अफ्रीकी साहित्य की

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

इनकी बड़ी विशेषता यह है कि इन साहित्यकारों ने अपने साहित्य का मुख्य विषय किसी व्यक्ति को न बनाकर अपने देश के इतिहास को बनाया। आज भी अफ्रीका की स्थिति बहुत बेहतर नहीं है। नगूगी वा थिआंग ने तब के अफ्रीकी समाज को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया जब केनिया में अंग्रेज अपना पैर जमा रहे थे। 'वीप नोट चाईल्ड', 'द रिवर बिटन' उनके उपन्यास है। चिनुआ अचेबे को अपने ही देश में नजरबंद कर दिया तो गुंगी अलेकेस लागूया कैन टेम्बा, बेसी हेड, डेनिस ब्रूटस लेखक तो देश छोड़कर चले गये। आज भी वहाँ के लेखक अपनी कलम का इस्तेमाल तलवार की तरह कर रहे है तथा अपने देश की आम जनता की आवाज उठा रहे है। आज भी 'हैवजोट' अर्थात 'कुछ नहीं है' की लड़ाई लड़ रहे है। भारत में तो दलित साहित्य की शुरुआत प्रेमचंद से मानी जा सकती है। निराला, नागार्जुन, यशपाल, अमृतलाल नागर, यादवेंद्र शर्मा, रामदरश मिश्र, विवेकी राय जैसे दलितेत्तर लेखक एवं महाश्वेता देवी भैटावा, उन्नप. पू. आर. अनंतमूर्ति आदि भारतीय लेखकों के साथ जुड़ जाये जिससे लेखन कलात्मक और जीवन समर बन सके। दलित साहित्य ने अपने अस्तित्व हासिल करने में सफलता प्राप्त की है। अब हम भारत का शीश अर्थात उत्तर भार के दलित साहित्य की बात करे तो केवल चार पाँच उपन्यास, चार पाच कहानी संग्रह, इनसे कुछ अधिक नाटक और एकांकी तथा दो-तीन आत्मकथाएँ थीं जो सही माइने में दलित साहित्य माना जाता है। उत्तर भारत में दलित प्रचुर मात्रा में नहीं दिखाई देता।

पंजाबी दलित साहित्य की जब हम बात करते है तो वहाँ पर जातिवाद, वर्गवाद नही है जो अन्य राज्यों में है। पंजाबी दलित साहित्य का मूल 'आदिग्रंथ या गुरुग्रंथ' है। डॉ. राजेंद्र सिंह नूर ने 'दलित टेक्स्ट की बात', मनमोहन बाबा की नवलि का 'अजात सुंदरी' कहानी संग्रहों में दलित संवेदना उभरी है। उपन्यास साहित्य में नानक सिंह, जसवंत सिंह, नारुला उपन्यासकार नामांकित है जिन्होंने दलित चेतना को प्रस्तुत किया। प्रथम दलित आत्मकथा प्रेम गोरखी की 'गेर हाजर आदमी' है। जिसमें यातना और पीड़ा का चित्रण कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। पंजाबी कविताएँ, पत्र-पत्रिकाएं भी अपना योगदान दलित साहित्य में अच्छी तरह से निभा रही है और पंजाबी दलित साहित्य धीरे-धीरे अपनी पहचान खड़ी कर रहा है।

मध्यप्रदेश के दलित साहित्य पर जब प्रकाश डालते है तो डॉ. सत्यप्रेमी और श्री लालचंद राही का नाम बहुत आदर के साथ लिया जा सकता है। अवन्तिका तथा मरमिट का भी योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। दलित समाज में जागृति एवं चेतना का प्रचार-प्रसार अपनी रचनाओं के माध्यम से करने वालो में है डॉ. देवेंद्र

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

दीपक, श्रीमती रमाकुमारी पांचाल, प्रो उके, साधना लोनहारे, डॉ. सत्यनारायण जाटिया, श्री जगदीश जाटिया, कपूर वासनिक, सी.पी. सेनिया, डॉ. रामगोपाल सिंह, श्रीमती कमला वर्मा, कंवरलाल खधौत आदि दलित साहित्यकार है जो अपनी कलम कुदाल बनाए हुए और दलित समाज में जागृति एवं चेतना का प्रचार-प्रसार अपनी रचनाओं के माध्यम से कर रहे है। मध्य प्रदेश में दलित साहित्य विभिन्न विधाओं के रूप में प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है। पश्चिम भारत अर्थात गुजरात और महाराष्ट्र के दलित साहित्य की चर्चा करे तो महाराष्ट्र अर्थात मराठी दलित साहित्य का सूर्य तेजोमय है। आज दलित साहित्य मराठी साहित्य का अविभाज्य अंग है। वास्तव में दलित साहित्य के कारण से मराठी साहित्य का पूरे भारत में प्रचलन हुआ है। लगभग सभी भारतीय भाषाओं में मराठी दलित रचनाओं का अनुवाद हुआ है। कुछ रचनाकारों की कृतियों का पाश्चात्य भाषा में भी भाषांतर हुआ है। मराठी दलित साहित्य में संत नामदेव, तुकाराम, जनाबाई से लेकर नारायण सुर्वे, दया पवार, केशव मेश्राम, नामदेव ढसाल, यशवंत मनोहर, लक्ष्मण माने, प्रल्हाद सोनकांबले, शरदकुमार निंबालकर आदि ने अपने साहित्य में चित्रण किया है।

गुजरात में दलित साहित्य का प्रादुर्भाव मराठी साहित्य से एवं अम्बेडकर के प्रभाव से ही हुआ है। गुजराती साहित्य की सभी विधाओं में दलित साहित्य है। दलित साहित्य में संशोधन एवं शोध कार्य होने जा रहा हैथ विश्व दलित साहित्य में गुजराती दलित साहित्य का प्रभाव जोरो से है। दक्षिण भारत के कर्नाटक, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश और केरल राज्यों की मातृभाषा में भी दलित साहित्य प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। कन्नड में 'दलित' पत्रिका से 'दलित' साहित्य की शुरुआत मानी जाती है। डॉ. बुहहण्णा हिंगमिरे, प्रो. चेन्नशावा लीकार और डॉ. शमशेखर ईमापूर, दूवनूर महादेव, बरगूट रामचंद्रप्पा, गंगाधर मुदलियार, तेजस्वी कट्टीमानी आदि दलित साहित्यकार है जिन्होंने कन्नड दलित साहित्य को और दलितों को अपने मूलभूत अधिकारों के प्रति सचेत किया है। उड़ीसा प्रांत में भी दलित साहित्य का अन्य भारतीय भाषाओं की तरह लेखन हो रहा है। उड़िया कथाकार गोपीनाथ महांति का कथन है कि, "करुणा और सहानुभूति के सहारे गैर दलित लेखक भी दलितों के बारे में अच्छा साहित्य लिख सकते है।" गोपीनाथ महांति का योगदान उड़ीसा दलित साहित्य में महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। विचित्रानंद नायक, रामचंद्र सेठी, कुमार हसन, इन दलित लेखको ने अपने जीवन की अनुभूति आत्मकथा के जरिये प्रकाशित की है। किंतु यह कहा जा सकता है कि अन्य भाषाओं की तरह उड़िया में 'दलित साहित्य' अधिक नहीं लिखा गया।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

आंध्र प्रदेश राज्य में तेलुगु भाषा में अनेक दलित साहित्यिक आंदोलनों के माध्यम से, कविताओं और गीतों के माध्यम से दलित साहित्य को उजागर करने का प्रयास हुआ है। तेलुगु भाषा में सूर्यवंशी, खाजा, स्त्रैणवा, कलेकूरि प्रसाद आदि ने तेलुगु दलित साहित्य द्वारा दलित चेतना का विकास किया। कालीपट्नम रामाराव, केशव रेड्डी, बी. एस. राम, एम. जी. रंगा, अरुणा, एन. आर. नंदी आदि तेलुगु दलित कथा साहित्य के आधार स्तंभ है। उसी तरह केरल राज्य में मलियालम भाषा द्वारा दलित साहित्य का लेखन हुआ है। विख्यात लेखक एम. टी. वासुदेवन नायर, तोपिल भासी, अय्यपा पणिक्कर, ओ. वी विजयन, बशीर, आनंद मलयालम इन सभी ने मलियालम दलित साहित्य को अपने साहित्य द्वारा अभिव्यक्त किया है।

निष्कर्षतः विश्व की सभी भाषाओं में दलित साहित्य उभर कर आया है। जिस तरह आज साहित्य ने नारी चेतना को स्वीकारा है उसी तरह दलित साहित्य को भी स्वीकारा है। यह आज के साहित्य की अनिवार्यता होगी। यह स्पष्ट कह सकते हैं कि सभी भाषाओं में लिखा गया दलित साहित्य 'सर्व धर्म समभाव' की बात करता है। क्योंकि यह दलित साहित्य बेखौफ अभिव्यक्ति का साहस साहित्य द्वारा व्यक्त करता है। सही मायने में देखा जाय तो सभी भाषाओं में लिखा गया दलित साहित्य 'स्वानुभूत' साहित्य है। जब जब संसार का मानव मुश्किल वक्त में फँसा है तब-तब साहित्य ने उन्हें सँवारने की चेष्टा की है। आज का दलित साहित्य अनेक अनछुए पहलुओं को उद्घाटित करता है और इस दलित साहित्य के कारण वैचारिक आंदोलन भी छिड़ रहे हैं। सही मायने में आज दलित साहित्य वैश्विक धरातल पर अपनी अलग पहचान बना चुका है।

संदर्भ

- भारतीय कंवल-2002, दलित विमर्श की भूमिका, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद.
- सिंह डॉ. संदीप-2003, भारत में दलित चेतना गांधी और आंबेडकर, आर.बी.ए. पब्लिकेशर्स, जयपुर।
- [illegible] डॉ. बी.आर. राष्ट्रीय आंदोलन में डॉ. आंबेडकर की भूमिका, समता साहित्य सदन, जयपुर।
- [illegible] विजय-1993, युगपुरुष बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर, समता प्रकाशन, दिल्ली।
- [illegible] कुमार-2003, आधुनिकता के आईने में, दलित-वादी प्रकाशन, दिल्ली।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani